राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 6 अंक : 73 15 मई 2003

सदस्यता शुल्क : ——— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू व सूचना	18
3.	कमाई (महर्षि शिवव्रत लाल जी)	20
4.	अनमोल वचन	21
5.	ज्ञान-सार	21
6.	स्वास्थ्य स्तम्भ (औषधि प्रयोग)	22
7.	सत्संग सार	24
7.	कहानी (नैतिक शिक्षा)	26
8.	सतगुरु कृपा	27

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-285094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग

भिवानी कैसेट क्रमांक..... 82

दिनांक 4.7.92

समय .....दोपहर

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! स्वामी जी महाराज जैसा संत न हुआ है और न ही होगा। वे राधास्वामी धाम से आए थे। अगर पक्षपात छोड़ कर कोई बात करना चाहते हो, तो कोई किसी भी मजहब का हो, उसे सोचना ही पड़ेगा कि स्वामी जी महाराज जैसा संत न आया और न आने वाला ही है। तुम सोचोगे कि मैं ऐसी बातें क्यों कहता हूं? मैं ठीक कहता हूं। संतमत तो परम्परा से ही चला आता है पर सभी ने पर्दे में ही बातें कीं। दूसरी बात यह है कि सभी को आफत झेलनी पड़ी। स्वामी जी महाराज के साथ एक साधु ने तो गड़बड़ की, नहीं तो किसी की हिम्मत ही नहीं पड़ी। उस साधु को भी स्वामी जी ने ही बचाया।

मैं एक बात कहना चाहता हूं कि संतमत को स्वामी जी ने जितना खोल कर बताया उतना किसी ने भी नहीं बताया। राधास्वामी नाम न तो किसी जाति का है, न कौम का है, न किसी मजहब का है। राधास्वामी नाम तो कुल मालिक का नाम है। इस नाम को अगर हम समझ लेते हैं, तो सारी ही परेशानियां दूर हो जाती हैं। कह तो काफी देते हैं, पर समझते नहीं हैं। मेरे पास एक प्रेमी रहता था। उसको बड़ा अच्छा सत्संगी मानते थे। वह यूं कहा करता था कि राधास्वामी मत में भजन करने की जरूरत नहीं है। इसको समझ लो। मैं तो यही सोचता था कि यह इस मत को

समझ गया होगा। पर उसमें बाद में खुद में गिरावट आ गई। वह समझा ही नहीं था। अगर वह समझ जाता तो ऐसी बातें नहीं करता और उसमें गिरावट भी नहीं आती। राधास्वामी मत को समझ लेना ही सबसे बड़ी बात है। पहले तो यह समझ लेना चाहिए कि संत कितने आए हैं। कबीर साहब से पहले भी कोई आया होगा? नहीं। कबीर साहब को चारों युगों का संत माना जाता है। बहुत से कहते हैं कि हम कबीर ही बनकर आये हैं। मेरे पास एक चिट्ठी आई थी। उसमें उन्होंने लिखा कि हम बहुत ज्यादा घूमे—फिरे। अब हमें कबीर साहब के दर्शन हो गए हैं और आखिर में उन्होंने यह भी लिख दिया कि उसके लड़के और लड़कियां भी हैं। कबीर साहब किसी छोटी मोटी चीज का नाम नहीं। जो विषयों के कीड़े होते हैं, जो रात और दिन गंदे काम करते रहते हैं और दुनिया को ठगते रहते हैं, फिर वे अपने आपको कबीर कहते हैं। तो वे खुद भी कीड़े पड़कर मरेंगे और उनके अनुयायी भी कीड़े पड़कर मरेंगे। अगर कोई ये कहता है कि मैं खुद राधास्वामी दयाल बनकर आया हूं। मैं परम संत बनकर आया हूं। उसका साथ ही छोड़ देना चाहिए। वह पापी है। वह दुष्ट और अन्यायी है। वह तो अपने बच्चों को पालने के लिए या पेट भरने के लिए या अपनी मान बड़ाई के लिए ही ऐसा कहता है। मैं तो संतों की साख लेकर बातें करता हूं, वैसे ही नहीं करता। नानक साहब ने तो ये कहा है—

नानक नन्हा होय रहो जैसे नन्हीं दूब।
और घास जल जाएंगे, दूब खूब की खूब।।

क्या उन्होंने कभी बड़प्पन की बातें कही? नहीं। और भी ऐसी बातें मिलती हैं। जैसे रविदास जी की है या घीसा साहब की है—

छोटा सा होके रहना रे जगत में, तज दे न गर्व गुमाना।
तेरी देखत कितने चले गए, देख लिये धर ध्याना।।

अर्थात् बड़े—बड़े चले गए तू ध्यान धर के देख ले। कितने महात्माओं की बातें कहूं। स्वामी जी की वाणी में तो एक—एक तुक में दीनता दिखती है। हजूर महाराज जी की वाणी उनको बहुत छोटा बताती है। बाबा सावण सिंह जी ने लिखा है कि मैं संत नहीं हूं। मैं तो आप लोगों का सेवक हूं। मेरे गुरू महाराज अरमान साहब पूर्ण पुरुष थे। करणी के धनी थे। उन्होंने न तो अपनी जिन्दगी में कोई डेरा बनाया। न अपने जीवन में किसी से मांग कर खाया। न अपनी जिन्दगी में गुरूवाई का दावा किया। न अपनी जिन्दगी में यह कहा कि मैं संत हूं या परम संत हूं। उन्होंने तो अपने जीवन में यही कहा कि मैंने शिवव्रत लाल जी से नाम लिया था। यह मेरी डियूटी थी। मैं वह काम करने के लिए आया हूं। उन्होंने कभी भी ऐसी बातें नहीं कहीं। सच पूछो तो एक बात मेरे पास आई। महाराज फकीरचन्द जी ने कहा कि मैं राधास्वामी धाम से आया हूं। मैं कुल मालिक हूं। ऐसी बातें फकीर जी कह भी दिया करते थे। मेरे महाराज जी ने कहा—भगत! फकीर चन्द क्या कहता है? मैंने कहा—कोई बात नहीं। आप इस पर ख्याल न करना। ये व द्ध हैं और मस्त हैं। मस्त का पता नहीं क्या कह दे। उन्होंने कहा—मैं यही पूछना चाहता था कि तेरा दिमाग कितना है। मैंने कहा ये मस्त हैं और मस्ती में कह सकते हैं। जो उस घर पर पहुंच जाता है वह कह भी सकता है। महाराज तुलसी साहब की कोई ऐसी ही मिशाल है। तुलसी साहब बैठे हुए थे। उनके पास भी गुरूमुख बैठा था। इतनी देर में कोई मौलवी आ गया। इन संतों का आपस में प्यार होता हैं। आज कल के संत प्यार नहीं करते क्योंकि इस पेट ने ही जुल्म कर रखे हैं। ये डेरे धारी जो संत बने बैठे हैं। इन सब के सब में ही धोखा भरा है।

जो दूसरे की निंदा करता है उस संत के पास जाओगे, तो गिर जाओगे। वह रेडीएशन तुम्हारे अन्दर काम कर जाएगी। दूसरे

की निंदा मत करो। हां! जैसा हो वैसा कहा भी जा सकता है।

वे तुलसी साहब के पास गए। संत किसी का भी निरादर नहीं करते हैं। तुलसी साहब ने कहा—मौलवी साहब! कहां जा रहे हो? मौलवी साहब बोले—मैं हज करने के लिए जा रहा हूं। उन्होंने कहा—अच्छा जाओ। उनका गुरूमुख चेला बैठा था। उस चेले ने उस मौलवी की गर्दन पकड़ कर तुलसी साहब के चरणों में रख दी और कहा—देख, जिंदा हज है। ये जिन्दा काबा है। यहीं हज कर लो। तुलसी साहब की मिशालें सुनी हुई हैं। तुलसी साहब ने कहा—चुप। तुम क्यों इनका निरादर करते हो? तुझे भी इसके साथ हज करने जाना पड़ेगा। तुम भी इसके साथ हज करने के लिए जाओ। अब गुरू का हुक्म तो मानना ही पड़ता है। संतमत में यही बात काम करती है। सोचो! मैं क्या कहता हूं? सन्त मत में चाहे ज्ञानी बन जाओ, चाहे ध्यानी बन जाओ। कितना ही बड़ा बन जाओ। गुरू की बात से अगर एक इंच भी बाहर निकल जाता है तो धड़ाम से गिर जाता है। महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने एक को नामदान का आदेश देते हुए कहा–तू सन्त हैं तुझे नामदान का आदेश हैं । बाद में वह गिर गया । यहां तक कि महर्षि जी को भी बुरा कहा । उसका उसे भयानक दण्ड भोगना पड़ा । इस बात पर उसके खानदान वाले मुझसे बोले–यह वह सन्त था तो गिरा क्यो? मैंने कहा कि यह बात बहुत बारीक है। पूछने की बातें नहीं है। पर मुझे पता नहीं क्या कहा था या क्या नहीं। पर उन्होंने वे बातें मान ली और कहा कि आज हमें शांति मिल गई। पर जो मैंने कही वे बातें मुझे याद नहीं हैं। हजूर याद दिला देंगे तो बता दूंगा कि क्या कहा था। पर तुलसी साहब की बातें कहता हूं।

तुलसी साहब ने अपने चेले को मौलवी के साथ ही भेज दिया। कहते हैं वे नौका में बैठ कर गए। रास्ते में उस नौका का फट्टा टूट गया। जब नौका डूबने लगी, तो गुरुमुख चेले ने किसी

को याद नहीं किया। केवल अपने गुरु को याद किया। कहते हैं उस वक्त पानी के अंदर से किसी का हाथ निकला। उसने पूछा,—तूं कौन है ? उसने कहा,—मैं परमात्मा हूं। आ तुझे बाहर निकाल देता हूं। मौलवी तो निकल गया पर वह गुरूमुख उस फट्टे के उपर ही बैठा रहा। गुरुमुख शिष्य ने कहा,—मैंने तो अपना हाथ अपने गुरु को ही पकड़ाया है। मैं किसी और को अपना हाथ नहीं पकड़ाता। मैं परमात्मा को कुछ नहीं जानता। मैंने तो उस को कभी देखा ही नहीं। हाथ गायब हो गया। दूसरी बार हाथ फिर निकल आया। उसने कहा,—''अब तो आ जा।'' उसने पूछा,—'' आप कौन हैं ?'' आवाज आई—''मैं तेरे गुरु का गुरु हूं।'' तुलसी साहब के गुरु महाराज गोविंदसिंह जी थे। वे पर्दे से ही बातें कर गए। औरों को उन्होंने कहा था—

आज्ञा भई अकाल की, तभी चलायो पंथ।
सब सिखन से वीनती, गुरु मानियो ग्रंथ।।

ग्रंथ साहब को ही गुरु मानना पर जो रुहानी दौलत थी, वे तुलसी साहब को गुप्त देकर गए थे। वह धार कभी मिटी नहीं। वही आगे चलकर स्वामी जी महाराज में आईं। सीधे शब्दों में, जहां वह धार आती है वहां अनुभव फूट जाता है। वह पुस्तकों का कैदी नहीं बनता। मेरी ये बातें केवल उन्हीं लोगों को समझ में आयेंगी जो जिज्ञासु और बेधड़क हैं। वे मेरी बात पर अमल करेंगे। धार जहां आती है, वह विद्वान को नहीं देखती, विद्या को नहीं देखती, धनाड्य को नहीं देखती। जो धार आती है वह कुदरती अनुभव को फोड़कर आती है।

तब भी उसने अपना हाथ नहीं दिया, जब उन्होंने कहा कि मैं तेरे गुरू का गुरू हूं। उसने कहा—नहीं, मैं तो अपने गुरू को ही जानता हूं। फिर हाथ आया और कहा—आजा, मैं तेरा गुरू हूं। तब उसने हाथ दिया। वह तो संतों की ही मौज थी। अगर संत की

बात को झूठा समझें, तो गलत बात है।

मैंने छोटी उम्र में ऐसी बातें सुनी हैं। मनु जी महाराज ने लिखा है—वेद के अक्षरों का जो गलत अर्थ लगाएगा उसकी सात पीढ़ियां नर्क में चली जाती हैं। वेदों के पढ़ने वालो, सुनो! यदि कोई वेद के शब्द का एक अर्थ भी गलत लगा देगा तो उसकी सात पीढ़ियां नर्क में चली जाती हैं। मनु जी की ऐसी बातें सुनी हैं। वेद क्या कहता है—

नेति—नेति वेद पुकारे।

वह और भी आगे है। और भी आगे कहाँ है? संतों की बातें ही आगे की हैं। अगर संतों की बातों का गलत अर्थ लगा लेगा, तो उसकी १४ पीढ़ियां नर्क में जाएंगी। संतों की बातों का अर्थ अगर कोई बुद्धि से करता है, तो उसकी चौदह पीढ़ियां नर्क में जाएंगी। विद्या के बल से जो अर्थ करता है उसका सभी कुछ नर्क में जाएगा। संतों की बातों का अर्थ तो वही कर सकता है, जो खुद ही उस घर में पहुंच गया हो। जो खुद पहुंच जाता है वह उनकी बातों के बाहर और अंतर के दोनों अर्थ बता सकता है। वही उसको समझ सकता है। इसीलिए गुरूमुख की बड़ी बड़ाई है।

जब उसने हाथ की तरफ हाथ किया और आंखें बंद की तो कहने वाले कहते हैं कि वह तुलसी साहब के पास बैठा था। उसने तुलसी साहब के पांव पकड़ लिए और कहा—महाराज मेरी गलती थी। आपने मेरे घमण्ड को तोड़ दिया है। इसलिए कहते हैं—

गुरू बढ़ाए सब बढ़े, बल कर बढ़ा न कोय।
बलकर हिरण्याकुश, रावण बढ़े जड़ मूल से दिए खोय।।

ऐ सत्संगियो! मैं घमण्ड से नहीं कहता हूं। मैंने अपने सतगुरू को खुदा समझा और मैंने अपने सतगुरू को ही पल्ला पकड़ाया था। उन्हीं की दया से सब कुछ होता है। मैंने आज तक किसी की श्रद्धा भी नहीं तुड़वाई। कोई किसी भी मजहब का आया। मैंने

सभी को कहा—भाई! तेरा गुरू बड़ा अच्छा है। तेरे अंदर ही कमी है। इसको दूर करके अपने गुरू को बड़ा कर ले। अगर तेरा गुरू बड़ा है, तो तू भी बड़ा बनकर दिखा।

मेरे पास एक बड़ा भारी लैक्चर (भाषण) देने वाला महाराज चरण सिंह से नाम लेकर आया। मैं तो सीधा आदमी हूं। असलियत बताता हूं। उसने चरण सिंह जी से नाम लिया। मैंने कहा—वाह! तू तिर गया है। तू नाम तो ठिकाने पर ही लेकर आया है। पर वह नाम लेने के थोड़े ही दिन बाद गुरू बन गया। एक दो को नाम भी दिया होगा। फिर उसने एक दो गुरू और बनाए। धारा सिंह ने राधास्वामी दयाल से नाम लिया था। फिर बाद में वह (लैक्चर देने वाला) ऋषिकेश में जाकर उसका चेला बना। वह जिन्दा है और यही कहता है कि अब तो वहां ही है। मुझ से उसकी बातें हुई। मैंने कहा—क्या नाम है? उसने कहा—वे तो और ही नाम देते हैं। मैंने कहा—वह नाम मुझ से पूछ ले। उसने कहा—क्या नाम देते हैं? मैंने कहा—वे नाम देते हैं—धारासिंह। उसने कहा—आप को कैसे पता? मैंने कहा—मैं इनका जागा हूं। मैंने पूछा—क्या यही है? उसने बताया कि यही है। मैंने उसको बताया कि ये सब तो आगरा ही से निकाले हुए हैं। वहां इनकी कोई भी कीमत नहीं है। स्वामी जी महाराज ने खुद हजूर महाराज से बातें की —राधास्वामी मत को चालू करो। अगर जारी नहीं करते और मौज ही ऐसी है तो मेरी सुरत को भी वापिस मोड़ दो। तब स्वामी जी महाराज ने कहा—

गुरूमुख हो सो आगे पंथ चलावे।

इसी बात को सोचकर कहता हूं कि गुरूमुख होता है, वही काम करता है। पतिव्रता स्त्री ही पतिव्रता होती है। रामायण में एक जगह यह बात आती है—

धिक! उसका हीया, एक छोड़ जिसने दूसर किया।

मैं राधास्वामी मत से बंधा हुआ नहीं हूं। मैं तो उस शब्द से

बंधा हुआ हूं। उसको तुम चाहे राधास्वामी कहो, चाहे संत कबीर कहो। नानक या दादू कहो। रमा हुआ राम कहो। उस शब्द से ही बंधा हुआ हूं। उस राधास्वामी नाम को ही कुल मालिक समझता हूं। राधास्वामी नाम किसी बाबा जी का या माता जी का नहीं है। असलियत यही है कि जब तुम समझ गए कि राधास्वामी नाम सुरत या शब्द का है फिर तो झमेला ही मिट जाता है।

मेरे पास आने वाला कोई भी ऐसे कहकर नहीं जाता कि हम पूछने के लिए आए थे और हमें महाराज जी ने हमारी एक बात नहीं बताई।

एक भाई बापोड़ा गांव का साधु बना हुआ है। वह तोशाम में रहता है। उसका चेला मेरे पास आया। वह हरिजन है। मैं तो सीधा आदमी हूं नाम लेकर कह देता हूं। उसका चेला आया और उसने बातें कीं। मैं कम्बल बांट रहा था। मैंने पूछा—क्या बात है? क्या कोई कपड़ा लेना है? उसने तैश में आकर कहा—नहीं! मैंने पूछा—फिर क्या बात है? उसने कहा—मैं तो शब्द के बारे में पूछने के लिए आया हूं। मैंने उसका व्यवहार देखा। मैंने पूछा—क्या तुम्हारे गुरू ने कहा है या और कोई बात है? उसने कहा—मेरे गुरू से मुझे शांति नहीं हुई। मैंने कहा—तू खड़ा हो और भाग जा। तेरे गुरू ने जो कुछ भी बताया है उसकी हद तो तू मुझे बता। आगे फिर मैं और बता दूंगा। ये तू कभी भी न कह देना कि मेरे गुरू से मुझे शांति नहीं मिली। गुरू से शांति तो सभी को मिलती है। जिसमें खुद में ही शांति नहीं है तो गुरू क्या करेगा? तुम कहोगे कि नहीं करेगा। मैं फिर कहता हूं कि गुरू ही करता है। परन्तु जिससे काम लेना हो उसका करता है। हरेक का नहीं करता है। ये विश्वास करो कि अपना काम आप ही करना है। गुरू करता है। सतगुरू को पूर्ण ज्ञान होता है, वह पूर्ण भेद दे देगा। तुम्हें मंजिलों का भेद देकर तुम्हारे संशय और भ्रम को दूर कर देगा। आगे काम

तो तुम्हें ही करना है।

मेरा कनाड़ा में सत्संग था। एक बड़ी अच्छी लड़की आई। उसने कहा—महाराज! मैं एक बात पूछ लूं? मैंने कहा—पूछो बहन। उसने कहा—मैंने एक बाबा जी से नाम लिया हुआ है। मैंने कहा—अच्छी बात है। उसने कहा—यहां एक सत्संगी आया था, उसने बताया कि जब तक राधास्वामी पंथ में नहीं आएगी, तब तक तेरा कल्याण नहीं होगा। उसने कहा—मैं उसके बाद भ्रम में पड़ गई हूं। मैंने पूछा—क्या तेरे गुरू के ऊपर से तुम्हारा विश्वास हट गया है? उसने कहा—मैं भ्रम में पड़ गई हूं। विश्वास की बात आप देख लो। मैंने कहा—यह बड़ा भारी जुल्म है। तेरा गुरू कौन है? उसने बताया कि उसका गुरू राम स्नेही है। मैंने कहा—मैं समझ गया हूं। वह राजस्थान का है। मैंने कहा—बहन! उसके पास शब्द का भेद भी है। कोई शब्द की बात किसी ढंग से करता है और कोई किसी ढंग से करता है। वह सफेद कपड़े रखता है और बहुत ही अच्छा आदमी हैं।

शब्द को ही स्वामी कहते हैं। राधास्वामी नाम सुरत शब्द का है। राधास्वामी नाम किसी आदमी औरत का नहीं है। किसी मत मतांतर का नाम भी नहीं है। राधास्वामी नाम है सुरत और शब्द का। जो सुरत शब्द का उपदेश देता है उसे ही राधास्वामी मत का कह देते हैं। सो वह बहुत अच्छा है। वह बहुत खुश हुई। उसने कहा—मेरा तो जीवन ही बन गया। नहीं तो मैं डिग ही गई थी। मैंने कहा—नहीं, तू अपना काम करती रहो। ये जो डेरे धारी हैं, ये दूसरे जीवों को धोखा देने के लिए बड़े भारी झपट्टे मारते हैं। उनको डिगा देते हैं।

जो दूसरों की श्रद्धा तुड़वा देते हैं, मैं उनको अच्छा नहीं कहता हूं। मेरे पास इतने आदमी आते हैं। मैंने आज तक किसी की श्रद्धा नहीं तुड़वाई है। जो श्रद्धा तुड़वा देता है वह भी पाप

खरीदता है।

मेरा एक सत्संगी पुराना सनातनी है। महाराज भावानन्द के साथ का है। जब वह मेरे पास आया तो उसने कहा—मैं नाम लेना चाहता हूं। मैंने कहा—तू तो पुराना आदमी है। फिर वेदांत तो बहुत ही बड़ी चीज है। वेदांत को ही समझ ले। उसने कहा—मैंने सब समझ लिया है। मुझे तो शब्द का भेद चाहिए। मैंने पूछा—क्या उन्होंने शब्द नहीं बताया है? उसने कहा—नहीं। मैंने कहा—मैं बता दूंगा परन्तु तू अपना काम करता रह। मैंने उसको यह तो नहीं कहा कि तू अपने गुरू को छोड़ दे। मैंने यह भी नहीं कहा कि—तू इस काम को ही छोड़ दे। वह नब्बे वर्ष का हो चुका है और तगड़ा भी है। सुरत—शब्द का अभ्यास भी करता है, इसीलिए तगड़ा है। ऐसा नहीं होता तो वह बहुत पहले ही गिर जाता। नाम लेकर वह वापिस चला गया। उन्होंने पूछा—तुझे क्या मिला? उसने कहा—मैं क्या बताऊं? उन्होंने कहा—नहीं, बता क्या मिला? हमें छोड़कर तुझे क्या मिला? उसने कहा—मुझे शांति मिल गई है। उन्होंने कहा—वाह! ठीक है। काम करते रहो। अरे कहीं भी जाओ, जहां शांति नहीं मिलती, वहां कभी मोक्ष का मुंह नहीं देख सकते हो। जिस सतगुरू के पास शांति नहीं मिलती तो उसके पास मत जाओ। मैं आपको बता रहा था कि किसी की श्रद्धा न तुड़वाओ। अगर किसी को कहना चाहते हो, तो सीधी बातें कह दो। किसी को प्यारी लगे या न लगे। जो कुछ भी बनता है वह सतगुरू की दया से ही बनता है। अगर तुम यकीन से पूछते हो, मैं कुछ भी नहीं जानता। जो कुछ भी मैं बोलता हूं वह मेरे सतगुरू की ही दया है। मेरा एक ही सहारा है कि उनकी दया है। आज मुझे पगला और बेवकूफ कहने वाला कोई भी नहीं है। आप तो मेरे ऊपर वारि कर पानी पीते हो। चरणाम त लेकर जाते हो। पर मेरा सतगुरू ही था जो ये बात कहता था कि पगला! तुझे क्या पता? तुझे क्या कभी समझ भी

आएगी? उस वक्त पर नहीं समझा, अब समझा हूं। मैं पगला ठीक ही था। मैंने कई काम पागलपन के किए तो वह दंड मुझे भोगना पड़ गया। मैंने भोगा। अब तो उनकी दया है। अब मैं क्यों भोगूंगा?

सतगुरू राजी तो कर्ता राजी।
काल कर्म की लगे न बाजी।।

जिसका तुम सहारा लेते हो या कुछ सीखते हो, उसका आदर किया करो। क्या आप लोगों ने मुझे किसी साधु की निंदा करते हुए सुना? मैं कभी भी निंदा नहीं करता हूं। ऐसा कह देता हूं—ये मेरे गुरू ने कहा था। फिर मेरी प्रारब्ध भी ऐसी ही है कि जो साधु शराब पीता है, मांस खाता है, अंडे खाता है या लड़कियों से पांव दबवाता है, अकेली लड़की को रखता है। उसके पास मैं कभी नहीं गया। एक बार चला गया तो फिर दूसरी बार नहीं गया। मुझे इस बात से घ णा है। यह मेरे वश की बात नहीं है। पर मैं किसी को बुरी बातें नहीं कहता हूं कि तू ये बुरा काम करता है। मैं कहता नहीं हूं पर जानता तो सब को हूं क्योंकि मैं अपनी छोटी उम्र से ही घूमता रहा हूं।

एक सत्संगिन थी। उसने बहुत अभ्यास कर रखा था। मैं आपको महाराज सावण सिंह जी के वक्त की बातें बताता हूं। वह बड़ी भारी अभ्यासिन थी। परन्तु जब कोई स्त्री उसके पास से गुजरती, तो वह उसकी बड़ी भारी बेइज्जती किया करती थी। वह बुरा बोलती थी। कह देती थी कि तू तो फलां काम करके आई है। यदि कोई आदमी आता था तो उसको भी कह देती थी कि अब तू यहां सत्संगी बनकर आया है, पहले तू वह खोटा कर्म करके आया है। महाराज सावण सिंह जी ने उससे कहा—पगली! क्या करती है? इस तरह करने से तो तेरी कमाई भी जाती है। तेरा यह हक भी नहीं है कि तू किसी की भी बेइज्जती करे। नहीं तो मौज उल्टी हट जाएगी। उसने उनके पांव पकड़ लिए और कहा—आईंदा

ऐसा नहीं करूंगी। मेरे गुरू महाराज ने कहा था कि किसी की निंदा न करना। निंदा तो बहुत बुरी चीज है। निंदा करोगे तो तुम खुद गंदे हो जाओगे। अपना काम करते रहो।

अगर तुम बड़ा बनना चाहते हो, तो किसी की बुराई मत करो। बुराई करोगे तो बड़े नहीं बनोगे। मैंने ऐसे आदमी देखे हैं। एक बार यहां हमारे एक सत्संगी को किसी ने कहा—फलां आदमी आप की बुराई कर रहा है। उसने पूछा—अच्छा! क्या हमने उसको कुछ दिया है? उसने कहा—हां। आपने उसको हल जोतने के लिए बैल दिए थे। उसको जमीन भी दिलवाई थी। सत्संगी ने कहा—फिर तो वह गाली ही देगा। अपने पास तो जमीन और बैल थे। वे उसको दे दिए पर उस बेचारे के पास तो सिर्फ गालियां ही हैं। वह हमें कुछ देकर ही तो बदला उतार सकेगा। और वह क्या दे सकता है? सो जिसको तुम कुछ दोगे, वह भी तो तुम्हें बदले में कुछ देगा ही। जिसको तुम पालोगे, वही तो कुछ देगा। आप शांति रखो। अगर अगला आदमी भद्दा बोलता है तब तुम उसको आर्शीवाद दे दो। कभी भी बुरा न बोलो।

एक जगह पर महर्षि दयानन्द जी ने भाषण दिया। वहां एक पढ़ा लिखा ब्राह्मण उनके विरोध में बोल पड़ा। उसने उनके बारे में बहुत बुरा कहा। महर्षि जी के पास फलों के टोकरे रखे थे। उन्होंने शाम को अपने शिष्य से कहा—उस पण्डित को एक टोकरा फलों का देकर आओ। जब उसने पण्डित जी को टोकरा दिया तो उस पण्डित ने पूछा—ये कैसा टोकरा है? उसने कहा—इसे महर्षि जी ने पहुंचाया है। पण्डित ने कहा—मैंने तो उनको गालियां दी थी। उसने कहा—इसीलिये तो उन्होंने यह पहुंचाया है। वे किसी तरह बदला तो उतारेंगे। आपके पास तो गालियां ही थीं, परन्तु महाराज जी के पास तो फलों का टोकरा था। सो उन्होंने टोकरा पहुंचा दिया है।

ऐ सत्संगियो! कभी भी अहसान को मत भूलो। यदि कोई तुम्हारे ऊपर अहसान कर देता है, तो उसे मत भूलो। अगर कोई बुरा करता है, उसको भूल जाओ। अगर तुम उसकी बुराई को याद रखोगे, तो कभी भी परमात्मा नहीं बख्शेगा। उसको भूल जाओगे तो परमात्मा तुम्हें भी बख्श देगा और अगले से बदला भी ले लेगा। आपको कितने उदाहरण बताऊं? मोहम्मद साहब के विरोधी लोगों ने उनके दांत तोड़ दिए थे। ईशा—मसीह के मत्थे पर गुलमेख ठोंक दी थी। फिर भी उन्होंने आह नहीं की। बल्कि उन्होंने तो यही कहा कि मालिक इनको बुद्धि दे। अब उनके सितारे चमकते हैं। उनका मत संसार में फैल गया है। जो विरोध करने वाले यहूदी थे उनका कहीं खोज भी नहीं मिलता है। उनके कहीं भी दो घर इकट्ठे नहीं मिलते हैं। किसी वक्त में उनका राज था। इसीलिए कहते हैं—

बुरा खोजन मैं गई, बुरा न पाया कोय।
जो तन खोजूं आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

अगर कभी अपने प्यारे आदमी में दुख आ पड़े तो खुशी न मनाओ। उसकी हंसी न करो। उस प्यारे आदमी के दुख में दुखी हो जाओ। अगर वह तुम्हारी बुराई करता है, तो खुद ही गिर जाएगा। तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। बिगड़ता कब है? जब हम भी उसका बुरा सोचने लग जाते हैं। फिर तो दोनों ही बराबर हो जाएंगे। सो भला करने की कोशिश करो। अच्छे विचारों में रहो। सत्संगी बन कर दिखाओ। तभी लोग तुम्हें सत्संगी कहेंगे।

मैं शिक्षा तो बहुत ही देता हूं पर मैं अपने आश्रमों में देखता हूं तो वहां भी दो सत्संगी इकट्ठे नहीं रह सकते। अगर मैं दो दिन कहीं बाहर चला जाऊं तो झगड़े हो जाते हैं। महाराज फकीर चन्द जी बताया करते थे कि उनके आश्रम में भी चोरियां कर लिया करते थे। एक आदमी किसी से ५०००० (पचास हजार) रुपए की

लकड़ियों का बिल बनवा लाया। वहां पर ट्रस्ट है। उसने वे रुपये खजांची से ले लिए। दूसरे ने उसको पकड़ लिया। महाराज फकीर चन्द जी ने मुझसे कहा–संत ताराचन्द! वे इन लकड़ियों के हिसाब में पचास हजार रुपये खा गए। एक बार तो मैंने शोर शराबा किया। बाद में विचार किया–जब उसे खुद ही अपनी आत्मा का फिक्र नहीं है तो मैं उसकी आत्मा का फिक्र क्यों करूं? यहां तो इसी तरह काम चलता रहेगा। यहां तो कोई भी कमी नहीं आएगी फिर मैं क्यों काला मुंह करूं? वे अपने आप ही गिर जाएंगे। उन्हें खुद ही फिक्र करना चाहिए कि अगर हम आश्रम में चोरी करते हैं, तो हम खुद ही गिर जाएंगे। उन्होंने मुझसे कहा—बेटा! मैं तुझको एक बात कहना चाहता हूं। मैंने कहा—बताओ जी! उन्होंने कहा—बेटा, मैं गौड़ ब्राह्मण हूं। राधास्वामी धाम से आया हूं। (ये उनके अपने शब्द हैं। मैं अपनी तरफ से नहीं कहता हूं।) मेरी एक बात मानना। यदि तुम्हारे यहां कोई चीज उठ जाती है, तो हाय, हाय न करना। मैं तुझे आर्शीवाद देता हूं कि यदि एक चीज जाएगी तो सतरह आएंगी। मैंने कहा—ठीक है जी। उन्होंने आगे कहा—कोई आदमी अगर तुम्हारी बुराई करता है, तो तुम कुछ न बोलना। वह खुद ही गिर जाएगा। खत्म हो जाएगा। आश्रम में बहुत चीजें उठती है। मैं कभी भी ख्याल नहीं करता हूं।

सत्संगी बनने के बाद अपने विचार ठीक कर लेने चाहिए। अगर सत्संगी नहीं बने तो कुछ भी नहीं। तुम सत्संगी तो बन जाते हो पर अपनी पुत्र वधुओं को ही मार डालते हो। सत्संगिन बन गई और अपनी सास को मार डालती हैं। सत्संगी बन गये और अपने मां—बाप को मार डालते हैं। वे सत्संगी नहीं हैं। वे तो कसाइयों की औलाद हैं, वे कसाई हैं। क्या ऐसे लोग सत्संग से तिरेंगे? लोग कह देते हैं कि जिनको नाम मिल गया, वे तिर जाएंगे। मैं कहता हूं नाम लेने से नहीं तिरोगे। नाम के नियमों पर चलोगे तो तिर

जाओगे। नियम सब से ऊपर होता है। इसके नियमों पर चलो, तिर जाओगे। बेड़ा पार हो जाएगा।

मैं तो बात दूसरी कह रहा था। वह बात बाकी रह गई। मैं यही कहना चाहता था कि कहीं भी जाओ मजहब से बंधो मत। मजहब में आना बुरा नहीं है, बंध जाना बुरा है। तुम तो बंध कर बैठ जाते हो। मैं बहुत घूमा, पर मैं कहीं बंधा नहीं। मेरे गुरू की दया रही। मुझे सतगुरू ने जो बातें कहीं वे आज मेरे आगे आई हुई हैं। वे पूर्ण पुरुष थे। उनकी बड़ी अपार दया है। मैं उनका ऋण उतार नहीं सकता हूं। न मैं कोई गुरू हूं, न पीर हूं। न मैं संत हूं और न परमसंत हूं। मैं तो आप जैसा ही भाई हूं। आपमें ज्यादा गुण है, मुझ में इतने गुण भी नहीं हैं। मेरे अंदर तो इतना ही गुण है कि सतगुरू मेरे से कुछ न कुछ बुलवा लेते हैं। ये गुण बेशक देख लो। मैं तो सतगुरू का कुत्ता हूं। वह जो हुकम देते हैं, वैसा मैं कर देता हूं।

प्रेमियो! सत्संगी बनकर रहना सीखो। आप सत्संग में आते हो। यहां प्रेम करना सीखो। इन डेरों में कहीं भी शांति नहीं है। जो इन्सान स्वयं अपनी आत्मा का फिक्र करने की सोचता है और नर्कों से बचना चाहता है वही सत्संगी कहलाता है। परन्तु डेरों में तो वह उसकी चुगली करता है और वह उसकी बुराई करता है। ये सब रोजगारी आदमियों की बातें हैं। मैं तो यहां तक भी कह देता हूं कि अगर कोई यहा आश्रम में चोरी करता है, तो उससे हजारों गुणा आ जाएगा। मैं सतरह गुणा नहीं कहता हूं। हजारों गुणा आएगा। पर चोरी करने वाले को एक दिन बड़ा भारी दण्ड भोगना पड़ेगा। लोग कहेंगे कि ये सत्संगी होकर ऐसा हो गया। मैं कह देता हूं कि ऐसे आदमी सत्संगी होते ही नहीं हैं। उनके पाप उनको दुख देते हैं। महाराज फकीर चन्द जी कहा करते थे—गुरू दुखी होकर क्यों मरते हैं? उनका यही कारण होता है कि वे गुरू नहीं थे। उनके दिल में कोई इच्छा भरी हुई थी। वही इच्छा उनको

दुखी करती है। वह पाप उनको कष्ट देता है। हम साधु का सांग भर कर डाका मारते हैं। मैं भी वह डाका मारता हूं पर मुझे तो गुरू महाराज ने एक ढ़ाल दे दी। उस ढ़ाल से बच जाता हूं। नहीं तो मैं भी कम नहीं हूं।

मेरे गुरू महाराज ने एक बात कही थी—बेटा! तू संगत का धन मत खाना। यहां सेवा आती है यही संभलवाता हूं। दादरी जाता हूं वहां संभलवाता हूं। अंटा वालों और खडवाली वालों को संभलवाता हूं। मेरा क्या बिगड़ेगा? दिनोद में सेवा आती है उसको मैं संभाल कर रखता हूं। मैं स्पष्ट कह देता हूं कि मैं संगत के चार पैसे नहीं बरतूंगा। यह मेरे गुरू का आर्डर है। इसे तो मैं संगत में ही लगाऊंगा। तभी तुम्हारे ये काम चलते हैं। ये जो बन रहे हैं। इस सेवा से भी कुछ नहीं बनता है। यह तो उनके वचन से ही बन रहा है। मैं तो यहां तक भी कह देता हूं कि ऐसे भी हैं जो संत सतगुरू बन जाते हैं और वे संगत का पैसा लेकर अपने बच्चों को पहुंचाते हैं। उन जैसा पापी कोई भी नहीं है। संगत का पैसा लेकर शराब पीते हैं। ऐसे महात्मा और गुरू जैसा पापी कोई भी नहीं है। उनको कभी भी शांति नहीं मिलेगी। बल्कि उनके शिष्यों को भी नहीं मिलेगी। यह तो आप जानते हो कि जैसा ख्याल होता है वैसा ही हाल बन जाता है।

सो प्रेमियो, सत्संगियो! सत्संग नहीं किया। ये तो थोड़ी बातें बताई हैं कि मजहब किसे कहते हैं? असली तो पंथ पर ही बातें करते हैं। संतमत है। ये तो एक निखालिस कलाकन्द और मिसरी है। इसमें मिलौनी जरा भी नहीं है। बस संतमत को समझ लोगे तो बेड़ा पार हो जाएगा। संत मत में जाति कोई नहीं है। संतमत तो एक सच्चाई है। संतमत में तो सुरत और शब्द को ही समझना है। बाकी अपना काम करना है। जो काम नहीं करता है वह धोखे में रह जाता है।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दु

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी–2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

जून व जुलाई मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1.	सिचावली	2 जून – 8 जून
2.	थिरपाली	9 जून – 15 जून
3.	गाधली	16 जून – 22 जून
4.	झरझीला	23 जून – 29 जून
5.	दादरी	30 जून – 6 जुलाई
6.	सिवानी	7 जुलाई – 13 जुलाई
7.	हिसार	14 जुलाई – 20 जुलाई
8.	हांसी	21 जुलाई – 27 जुलाई

याद रखो

अनुकूलता हो या प्रतिकुलता दोनों में परमात्मा का उपकार मानों। अपनी गलती मान लेना ही महान चरित्र का लक्षण हैं।

पोथी पढ़-२ जग मुआ, पण्डित भया न कोय।
ढ़ाई अक्षर प्रेम के, पढ़े सो पण्डित होय।।

बड़े हुजूर महाराज परम सन्त ताराचन्द जी द्वारा फरमाये विडियो कैसेट व विडियो सी. डी का भण्डार

अन्तिम यात्रा — विडियो कैसेट व विडियो सी. डी

परम सन्त हुजूर कंवर सिंह जी महाराज द्वारा फरमाये विडियो कैसेट व विडियो सी. डी का भण्डार

नया सवेरा — विडियो कैसेट व विडियो सी. डी

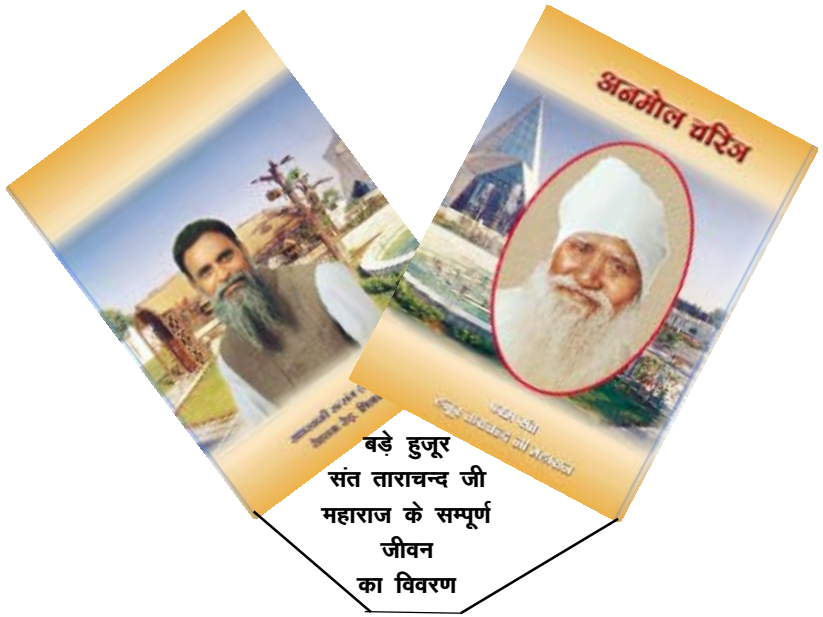

कमाई

महर्षि शिवव्रत लाल जी

एक साधु द्वार–द्वार भीख मांगा करता था। जो किसी ने दे दिया ले लिया। यदि नहीं दिया तो चुप हो रहता। एक दिन किसी ने उसे गालियां दी। किसी हमदर्द व्यक्ति ने कहा–'बाबा'। ऐसी कठिनाई की जिन्दगी तूने क्यों ग्रहण की हैं?" उसने उत्तर दिया–"जो जिसके पास होता है, वही देता हैं। जिसके पास धन है, धन देता है। जिसके विद्या हैं, विद्या देता हैं। जिसके पास कपड़े हैं, वह कपड़े देता हैं। जिन लोगों ने गालियों की कमाई की हैं उनके पास गालियों की पूंजी रहती हैं। जो जिनके पास हैं वही तो देगा। दूसरी चीज कहां से लायेगा और इसमें साधू को बुरा मानने की कौन सी बात हैं? वह झोली–झोली भरकर ले आता हैं। गुरू के नाम पर लाता है। गुरू को अपर्ण कर देता हैं। उसे न किसी से लेना हैं, न देना हैं। केवल एक कर्त्तव्य हैं, जिसे वह पालन करता रहता हैं। मैं क्यों किसी को बुरा कहूं और मुझे बुरा कहने का अधिकार क्यों हैं।

जिसकी जैसी कमाई वैसी उसकी खुदाई।

बात सच्ची हैं। इसके सच्चे होने में तनिक भी संदेह नहीं हैं।

जिस तरह बद की बदी जाती नहीं।
नेक के दिल में बदी आती नहीं।।

सतगुरू शान्ति प्रदान करने वाले होते हैं। जब उनके सामने जाओगे तो उनके परमाणु तुम्हारे परमाणुओं से टकरायेगें और तुम्हे शान्ति मिलेगी। क्योकि उनसे आये परमाणु शान्त और बलवान होते हैं वे तुम्हारे परमाणुओं पर विजय पा लेते हैं।

–हजूर कंवर सिंह जी महाराज

अनमोल वचन

- जैसी भी कामना अथवा आशा मनुष्य रखता है, उसी के अनुसार वह जन्म पाता है। इच्छाओं के बस में होकर ही मनुष्य कर्म करता है। ये कर्म विभिन्न योनियों में जन्म का कारण बनते हैं। *-तुलसी साहिब*
- गुरुमुख भजन और बन्दगी करता है और रोता है, मनमुख गुनाह करता और हंसता है। *-महर्षि शिवव्रत लाल जी*
- जिसमें यह तीन बातें सन्तोष और मालिक का खौफ और दर्शन की बिरह और बेकली नहीं है उसका उद्धार मुश्किल है।*-स्वामी जी महाराज*
- जुबान को सम्भाल कर रखना बहुत मुश्किल है, बेजा बचन जबान से नहीं निकालने चाहिये, और न किसी की निन्दा करनी चाहिए*-कबीर साहब*
- उस शब्द ने सारी दुनिया की रचना की है, शब्द ने धरती पैदा की है, सूर्य पैदा किया है, चन्द्र पैदा किया है। *-गुरु नानक देव जी*
- इस देह में बैठकर यदि हम अच्छे कर्म करते है तो अच्छा नतीजा भोगने के लिये आ जायेंगे। बुरे कर्म करते हैं तो बुरा नतीजा भोगने के लिये आयेंगे। *-गुरु अर्जुन देव जी*

ज्ञान-सार

- सांसारिक स्वाद वास्तव में जीती-जागती म त्यु है।
- बात से नहीं, क्रिया से सिद्धि मिलती है।
- परमात्मा के भजन में प्रमाद एवं आलस्य का त्याग करें।
- संसार के आश्रय का र्स्वथा त्याग करना चाहिये।
- श्रेष्ठ पुरुष शत्रु के साथ भी अच्छा बर्ताव करते हैं।
- मैं भगवान का हूं और भगवान मेरे हैं, ऐसा सम्बध जोड़ें।

स्वास्थ्य स्तम्भ

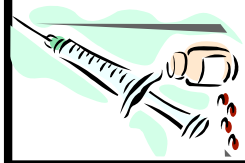

मधुमेह भाग-1

१. मधुमेह में अमरुद का पत्ता

१. मधुमेह को नियन्त्रित करने का बहुत प्रभावशाली और आसान इलाज यह भी है कि मधुमेह के रोगी को अमरुद के पेड़ का एक अच्छा पत्ता (जो कि अच्छी तरह विकसित हो) लेकर रात्री एक गिलास पानी में भिगोकर रखना चाहिये और फिर प्रायः उस पानी को सर्वप्रथम पीना चाहिये। लगातार इस प्रकार लेते रहने से एक महीने में आपको अनुकूल परिणाम नजर आयेगा और किसी अन्य दवा आवश्यकता न रहेगी।

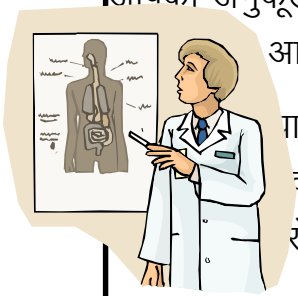

ा पाव अमरुद के पत्ते भली भांति कूटकर जल दूसरे दिन सुबह छानकर पान करने से बहुमूत्र रोग की बढ़ी अवस्था में विशेष लाभ होता है।

२. मधुमेह की परीक्षित औषधि-जवाफूल

१. उड़हल (जवा जशवंती, जौशान) के फूल की कलिका मधुमेह का रोगी सवेरे खाली पेट यानि मुंह धोकर दस कलिया चबाकर खाएं। ऐसा एक सप्ताह या रोग अधिक पुराना हो तो एक महीना खायें । अधिक दिन भी खायें तो किसी तरह की खराबी नही होगी, लाभ ही होगा। औषधि सेवन से पहले

पेशाब की जांच करा लें। पेशाब में चीनी चाहे कितनी क्यों न आती हो, इससे अवश्य लाभ होगा।

२. जवाफूल सात, कालीमिर्च दो के साथ प्रतिदिन प्रातः काल सेवन करके भी मधुमेह से लाभ उठाया जा सकता है।

३. मधुमेह की अचूक दवा-पलाश के फूल

किसी मिट्टी के बर्तन में एक गिलास जल कुएं का भरकर इसमें पांच नग पलाश के फूल डाल दें जो कि आसानी से सब जगह उपलब्ध हैं। सुबह फूलों को मसलकर बासी मुंह इस पानी को पियें। प्रति सप्ताह एक फूल बढ़ाते रहें । चार सप्ताह में रोग गायब हो जायेगा।

विशेष :

१. इस पेड़ को ढाक भी कहते हैं तथा अंग्रेजी में इसका नाम BUTEA MONOSPERMA है। यह INDIAN FLAME OF FOREST के नाम से प्रसिद्ध है।

२. पलाश के फूल अनुराधा नक्षत्र के समय तोड़कर प्रयोग से और भी लाभ होता है।

।। राधास्वामी।।

पुस्तक "स्वदेशी चिकित्सा सार" -डा. अजीत मेहता "आयुर्वेद रत्न"

lRlax&lkj

हांसी

13.4.2003

मन ही जीव को संसार में घसीट कर लाया है और यह उसी के कारण लखचौरासी में भटकता फिर रहा है। जब तक यह जीव अपने मन को सन्त सतगुरु के हवाले नहीं कर देता है, इसका चौरासी के चक्कर से छुटकारा पाना सम्भव भी नहीं है। लोग मन्दिर, मस्जिदों, गुरुद्वारों, होम–यज्ञों, पूजा–पाठों, में हर जगह यह कह कर जाते हैं कि–सब एक ही बात है, चलो यहाँ भी अपनी हाजरी दे आते हैं। वास्तविकता यह है कि ऐसा कहने व करने वाले सन्तों सतगुरुओं के महत्त्व को ही नहीं समझते हैं। वे यह नहीं समझते हैं कि ये सब तो काल और मन की भक्तियाँ है। मन ही तो हमारा शत्रु है और शत्रु कभी भी अपने आप को मारने की विधि नहीं बताता है। अतः मन तो कभी

भी अपने मारने की विधि किसी को नहीं बता सकता है।

जीव के मन पर अंकुश तो केवल सन्त सतगुरु के दर्शन और उसके वचनों से ही सम्भव हो सकता है। अतः उसके भवबन्धन से मुक्त होने के लिए उसे अपना मन पूर्ण सन्त सतगुरु को अर्पण करना आवश्यक है। अतः जीव के लिए अनिवार्य है कि वह उस शब्द भेदी सतगुरु के दर्शन और महत्त्व को समझे और उसकी तलाश करे। मनुष्य जिस वस्तु का ध्यान करता है तो तत्काल ही उस वस्तु के गुण उसमें आने लग जाते हैं जैसे खटाई के नाम लेने से खटास और मिठाई का नाम लेने से मिठास मुँह में आ जाता है। इसीलिए महात्मा इसी बात को यूँ भी समझाते हैं कि–

जल देखे शुचि उपजे, साधु देखे ज्ञान।
माया देखे लोभ उपजे, तिरिया देखे काम।।

जितना महात्माओं के दर्शन का महत्त्व है, उससे भी कहीं अधिक उनके वचनों पर चलने का महत्त्व है। बहुत से सत्संगी महात्माओ के बहुत से सत्संग सुनने का प्रयत्न करते हैं और सुबह से शाम तक उनके सत्संगों की कैसेट्टें भी सुनते रहते हैं, परन्तु उनके वचनों पर चलने का प्रयत्न तो नहीं करते हैं। इसीलिए उनके मन व आचरण में रत्ती भर भी बदलाव नहीं आता है। सो सारे सत्संग और दिन भर बार–बार कैसट्टें सुनने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता तो इस बात की है कि बे सन्तों के वचनों को सुनकर मनन और निदिध्यासन करके उन पर चलने का प्रयत्न करें। यदि कोई ऐसा कर लेगा तो निश्चित ही वह बुराई का रास्ता बदलकर भलाई पर चलना शुरु कर देगा और उसका मन काल का वकील न रह कर दयाल का शिष्य हो जाएगा। क्योंकि जब किसी जीव का कोई अवगुण निकलेगा तो उसका स्थान गुण ही ले लेगा। यदि मनुष्य पाप करना छोड़ देगा तो वह निश्चित पुण्य ही करेगा। इस प्रकार उसकी रहणी ही उनमुनी हो जाएगी। कबीर साहब ने तो उनमुनी रहणी के बारे में यह कहा है कि–

कहूँ सो नाम सुनूँ सो सुमरन खाऊँ-पीऊँ सो पूजा।
ग्रह उजाड़ एक सम भासूँ, भाव मिटाऊँ दूजा।।
जहाँ जहाँ जाऊँ, सोई परिक्रमा जो करूँ सो सेवा।
सो जाऊँ तो करूँ दण्डवत्, पूजूँ और न देवा।।
कहें कबीर यह अनुभव रहणी, सोई प्रकट कर गाई।
सुख-दुख से परे एक परमसुख, सो सुख रहा समाई।।

अब मुक्ति २ तो सभी लोग करते हैं, परन्तु किसी को मुक्ति का पता नहीं है। वह क्या है और कैसे प्राप्त हो सकती है। मुक्ति इतनी छोटी वस्तु तो नहीं है जो चलते–चलते, बातों ही बातों में किसी को भी प्राप्त हो जाए। इसीलिए सभी भूल–भ्रम में फँसकर काल और मन की भक्तियां करते हैं और मोक्ष की आस बान्ध कर बैठ जाते हैं। ये न ही सतगुरु के बारे में जानने और उसको पहचानने का प्रयत्न करते हैं और न ही महात्माओं के वचनों के अनुसार अपना आचरण ही बदलते हैं।

वेद, पुराण, भागवत् गीता इनको सब हढ़ावैं।
उनका जन्म सफल रे प्राणी! जो पूरा गुरु पावैं।।
सतगुरु चिहनों रे भाई।।

कहानी — नैतिक शिक्षा

एक आदमी था, जो रात–दिन अपने बारे में ही सोचा करता था। अपने ही बारे में लोगों से कहा–सुना करता था। लोग उसकी ख्याली पुलाव पकाने की आदत से अथवा बड़बोलेपन से तंग आ चुके थे। वे उसकी बातों को सच न मानते थे, न उसकी किसी बात को गंभीरता से लेते थे। जब कोई उसके सामने पड़ता और वह उससे अपनी योजना पर बात करने लगता तो दूसरे व्यक्ति उसकी बातों में कान ही नहीं देते थे। वह लोगों के इस व्यवहार से बड़ा असन्तुष्ट था, और समझ न पाता था कि क्यों लोग उसकी अवहेलना करते हैं।

एक दिन वह एक महात्मा के पास गया और पूछने लगा–"महाराज कोई ऐसा उपाय बताईए जिससे लोग मेरी बातों को सुने।"

महात्मा को अपना समाधान देने में कुछ देर लगी। उसने कहा–"यदि तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारी बातों को सुने तो इसका एक मात्र उपाय यही हैं कि तुम दूसरों की बातों को सुनो।"

महात्मा जी ने जो कुछ कहा उसमें शत–प्रतिशत सच्चाई थी। जब हम अपनी ही बात दूसरे के गले में उतारना चाहते हैं तो दूसरे को वह तनिक भी आक ष्ट नहीं करती। जब आप दूसरे में कोई रुचि नहीं लेते तो दूसरा भी आप में कैसे रुचि लेगा।

इस दुनिया में एक हाथ दे, एक हाथ ले का नियम है। आप जो दूसरों से लेना चाहते हैं वह दूसरों को दीजिए।

नीतिज्ञों ने भी कहा है–जैसा व्यवहार आप चाहते हैं कि लोग आपसे करें, आपको चाहिए कि वैसा व्यवहार आप दूसरों से करें।

सतगुरु कृपा

कुलमालिक तथा सन्त सतगुरु अपने श्रद्धालुवों के मां–बाप, भाई–बहन, मित्र, भंगी, लोहार, चौकीदार, वैद्य–डाक्टर ही नहीं अपितु वे पति–पत्नी बनकर भी उनका कार्य करते रहे हैं। यह एक सर्वविदित तथ्य है वह कुलमालिक 15 दिन तक भक्तिन सखोबाई बनकर, उसके पति के साथ में उसके घर पर रहे, जब कि स्वयं भक्तिन सखोबाई व न्दावन की तीर्थयात्रा पर गई हुई थी।

ई० सन् 1995 के अक्तूबर–नवम्बर मास में मुझे राधास्वामी आश्रम भिवानी में बड़े हुजूर महाराज जी के कैसट्टो को लिपिबद्ध करने की सेवा मिल गई। मैं इस कार्य को करने का सब से अच्छा समय रात्रि का समझता था। परन्तु इस कार्य को करने में मेरी सब से बड़ी रुकावट एक ही थी कि–मकान बड़ा था और मेरी धर्मपत्नी घर पर अकेली ही थी। परन्तु मैंने अन्ततः आश्रम में ठहर कर रात्रि में काम करने का साहस कर लिया। परन्तु कुछ दिन के बाद किसी ने मेरी धर्मपत्नी को डराने या कोई सामान चुराने की गर्ज से दो–एक बार घर के आस–पास घूमने का प्रयत्न किया, जिससे घरवाली को थोड़ी परेशानी हुई। पड़ोस में मेरे अपने एक मित्र की लड़की प्रकाशवती रहती थी। वह अपनी आण्टी से सहानुभूति रखती थी। अतः वह कभी–कभार उसको सम्भालने के लिए उसके पास आ जाती थी।

एक दिन सायं को लगभग 5–6 बजे मैं आश्रम से घर गया और उधर प्रकाशवती भी अपनी आण्टी से मिलने आ गई। वे दोनों बड़े कमरे में बैठी बातें कर रही थीं। मैं उनके सामने दूसरे कमरे में बैठा था। मैंने देखा कि अकस्मात, प्रकाश ने झुक कर मकान के बाहर गेट पर बड़े ध्यान से देखा और उसने अपनी आण्टी से आहिस्ता २ कुछ बातें की। इस प्रकार से वह झुक २ कर गेट की तरफ कई बार देखती रही और अपनी आण्टी से बातें करती रही।

मैंने महसूस किया कि कुछ बहुत ही विशेष बातें वे कर रही थी। लगभग आधे घण्टे के बाद प्रकाश के जाते ही मैंने घरवाली से पूछा कि–प्रकाश तुम्हारे साथ क्या बातें कर रही थी और बाहर की तरफ वह क्या देख रही थी? उसने बताया कि जब प्रकाश यहां बैठी थी, तब उसको महाराज जी गेट पर खड़े दिखाई दे रहे थे। उसने मुझे यही कहा कि–आण्टी! तुझे इस मकान में अकेली होने के कारण घबराने की कोई जरूरत नहीं है, चाहे रात को भी अपने घर के किवाड़ खुले छोड़ कर सोती रहना। तुम्हें किसी प्रकार का कोई भय नहीं है। इस घर की रखवाली तो स्वयं आपके महाराज जी ही कर रहे हैं।

यह पता नहीं है चोरी का प्रयत्न करने वालों को ही स्वयं महाराज जी गेट पर खड़े दिखाई दे गए अथवा प्रकाश ने आस–पास पड़ोस में स्वयं हुजूर महाराज जी के दिन में साक्षात, गेट पर खड़े होने की चर्चा करने से वे लोग डर गए। जो भी कुछ हुआ उस दिन के बाद में न ही घरवाली को डराने या चोरी के प्रयत्न करने की घर पर कभी कोई घटना नहीं घटी और यदि किसी प्रकार वह रात को जाग भी गई तो उसको किसी प्रकार का भय भी नहीं लगा।

हमारे पड़ोसियों और हमारे अपने आदमियों ने तो यही बताया कि हमारे सन्त सतगुरु तो हमारे घर की दिन–रात निगाह रखते हैं और ऐसा ही हमने अनुभव भी किया।

दास

अभय राम

जी-10, भारत नगर कर्मचारी कालोनी,

रोहतक रोड़, भिवानी (हरियाणा)

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।